!! श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः !!

विशद

श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान

माण्डला

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 8 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 18 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 46 अर्घ्य
चतुर्थ वलय में – 48 अर्घ्य
पंचम वलय में – 10 अर्घ्य
कुल 130 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागर जी महाराज

कृति	:	**विशद श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान**
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	तृतीय-2020 प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी महाराज क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी ब्र. प्रदीप भैया
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी 9829076085, ब्र. आस्था दीदी 9660996425 ब्र. सपना दीदी 9829127533, ब्र. आरती दीदी 8700876822
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश सेठी जयपुर, 9413336017 2. महेन्द्र जैन दिल्ली 9810570747 3. पद्म जैन रेवाड़ी 9416888879 4. हरीश जैन दिल्ली 09818115971
मूल्य	:	21/- रु. मात्र

:: अर्थ सौजन्य ::

श्री पारसराज जैन सुपुत्र श्री दिनेश कुमार जैन
श्रीमती अनिता जैन पौत्र नीतेश जैन, प्रीति जैन,
रितेश जैन, सोनिया जैन, प्रगम जैन,
प्रशम जैन, संवेग जैन, सर्वज्ञ जैन
खंडेलवाल रामपुर (उ.प्र.)

मुद्रक : पारस प्रकाशन, दिल्ली. मो.: 9811374961, 9811363613
ईमेल : pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

''मन के उद्‌गार''

परम पूज्य गणचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज के परम तेजस्वी शिष्य वर्तमान में सर्वाधिक पूजन विधानों के रचयिता साहित्य रत्नाकर **आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज** द्वारा रचित यह **अहिच्छत्र पार्श्वनाथ महामण्डल विधान** लौकिक एवं पारलौकिक दृष्टि से एक अतिशयपूर्ण विधान है। अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान से पहले प्रथम बार आचार्य श्री ने श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान की रचना की उस विधान की एक लाख प्रतियाँ भारत वर्ष के विभिन्न जैन मन्दिरों में पहुँची जहाँ-जहाँ भी यह विधान कराया गया वहाँ के श्रावकों ने इस विधान की सरल व मधुर भाषा में होने से काफी प्रशंसा की हमने स्वयं ने मंत्रोच्चारपूर्वक 200 स्थानों पर यह विधान करवाया इस विधान के कई अतिशय भी देखने को मिले दिल्ली चातुर्मास के समय हमने आचार्य श्री से पुनः निवेदन किया कि आचार्य श्री आपने श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ सहित अनेक विधानों की रचना की और सभी विधान श्रावकों द्वारा श्रद्धा भक्ति से किये जा रहे है लेकिन जहाँ से भगवान पार्श्वनाथ जी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ उस पुण्य भूमि का विधान भी आप तैय्यार करें। आचार्य श्री ने निवेदन स्वीकार कर अपने व्यस्ततम समय में से समय निकालकर इस विधान की रचना की यह विधान मंदिर जी में उत्साहपूर्वक मांडले की रचनाकर समाज के सहयोग से पण्डित जी संगीतकार, त्यागी वृत्ती आदि के निर्देशन में करना चाहिए आपको स्वयं अकेले करना है। तो मांडले की रचना किए बिना आप अष्ट द्रव्य से थाली में भी यह विधान सम्पन्न कर सकते हैं।

पुनः आचार्य श्री के चरणों में बारम्बार नमोस्तु और भावना भाते हैं कि आगे भी आपकी लेखनी और भी विशाल रूप लेते हुए जिनवाणी की सेवा में संलग्न रहे।

मुनि विशाल सागर
संघस्थ आ. श्री 108 विशद सागर जी महाराज
अहिक्षेत्र पारसनाथ 20-02-2020

भक्ति पुष्प

पारस प्रभु है जग का नूर, जिनकी ख्याति दूर दूर-सदा याद रखना।
तीरथ है अहिच्छत्र मशहूर, वहाँ जाना तुम जरूर-सदा याद रखना।।

आचार्य समन्तभद्र जी ने स्वयंभू स्त्रोत में पार्श्वप्रभु की भक्ति करते हुए कहा है

तमाल नीलेः सधनुस्तडिद्गुणेः प्रकीर्ण भीमाऽशनि-वायु-वृष्टिभिः।
वलाहकैवैंरि-वशैरुपद्रुतो, महामना यो न चचाल योगतः।।

आज का मानव भौतिकता की अंधी दौड़ में आँखों पे मोह की पट्टी बाँधकर ऐसे दौड़ रहा है जैसे कुछ मिलने वाला हो। लेकिन वह अपने कर्त्तव्य को, अपनी परम्परा को विस्मृत करता हुआ भागे जा रहा है जब आँख खोलकर देखता है तो हाथ मलता ही नजर आता है। जब कभी कोई समस्या आधि-व्याधि आदि सामने आती हैं तब भगवान को स्मरण करता है किसी कवि ने कहा है

दुख में सुमरन सब करें, सुख में करे ना कोय।
जो सुख में सुमरन करे, तो दुख काये को होय।।

प्रभु भक्ति की महिमा कुछ अलग है अभी तक जिस-जिस ने सच्चे भावों से भक्ति की है उसे अवश्य ही सफलता प्राप्त हुई है जैसे मानतुंगाचार्य, सती चंदन बाला, सीता, मैनासुंदरी आदि। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश का प्रसिद्धक्षेत्र **अहिच्छत्र पार्श्वनाथ** है जहाँ अनेक चमत्कार हुए हैं वहाँ बहुत दूर-दूर से यात्री दर्शन करके अपनी मनोकामना पूर्ण करते हैं हमारे लिए बहुत श्रद्धा है पार्श्व बाबा पर पहले कभी दर्शन नहीं किये फिर भी उनकी भक्ति तहेदिल से की। चाहे हम किसी भी परेशानी में हों बाबा ने हमें अपनी छाया देकर उबारा है। जहाँ प्रभु और गुरु मिल जाये तो सोने पे सुहागा जैसा काम हो जाता है। हमारे **पूज्य ज्ञान वारिधि आचार्य गुरुदेव विशदसागर जी** ने **'अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान'** को अपनी लेखनी से उकेरा है जो अभी तक सुनने में नहीं आया यह विधान। इस विधान को हम अपनी अंतरंग भक्ति से करें तो मन में शांति एवं रोग शोक आदि अनेक पीड़ाओं से निवृत होकर मोक्ष के राही बन सकते हैं। श्रावक धर्म का पालन कर सांसारिक सुख प्राप्त कर सकते हैं।

अटल तकदीर पर मेरे श्री अरिहंत लिखा है।
जुबां पर देख लो मेरे जय जिनेन्द्र लिखा है।।
आँखों में देख लो मेरे गुरु विशद लिखा है।
हृदय को चीरकर देखो श्री पार्श्वनाथ लिखा है।।

ब्र. सपना दीदी
संघस्थ आचार्य विशद सागर जी

श्री नवदेवता पूजा

(स्थापना)

हे! लोक पूज्य अरिहंत नमन्, हे! कर्म विनाशक सिद्ध नमन्।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु, उपाध्याय को शत वन्दन।।
हे! सर्व साधु है तुम्हें नमन्, हे! जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत! में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योः संसार ताप विनाशनाय चंन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल, होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वनमें ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(घत्ता छन्द)

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नम:।

(दोहा)

मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल॥

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई॥
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई॥
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...

(दोहा)

नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम्॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें॥

इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री पार्श्वनाथ स्तवन

दोहा **अहिच्छत्र में पार्श्व जिन, पाए केवल ज्ञान।**
भाव सहित उनका यहाँ, करते हम गुणगान॥

(शम्भू छन्द)

हे पार्श्वनाथ करुणा निधान, उपसर्ग विजेता तीर्थंकर।
हे परम ब्रह्म! हे कर्मजयी! हे मोक्ष! प्रदाता शिवशंकर॥
हम नमन करें तव चरणों में, शुभ भावों से गुणगान करें।
स्वातम रस परमानन्दमयी, सुज्ञान सुधा का पान करें॥1॥

वैशाख कृष्ण द्वितिया तिथि को, वामा के गर्भ पधारे थे।
श्री आदि देवियों ने आकर, माता के चरण पखारे थे॥
शुभ पौष वदी ग्यारस तिथि को, श्री पार्श्वनाथ ने जन्म लिया।
तब मेरु सुदर्शन के ऊपर, इन्द्रों ने शुभ अभिषेक किया॥2॥

वह धन्य घड़ी थी धन्य दिवस, हो गई बनारस शुभ नगरी।
श्री अश्वसेन जी धन्य हुए, हो गई धन्य जनता सगरी॥
नौ हाथ उच्च तन था प्रभु का, शुभ हरितवर्ण जो पाये थे।
सौ वर्ष आयु पाने वाले, पग नाग चिन्ह प्रगटाये थे॥3॥

तिथि पौष वदी एकादशि को, उत्तम संयम जिनवर धारे।
देवों ने हर्षित होकर के, प्रभुवर के बोले जयकारे॥
वन में जाकर प्रभु योग धरा, तन से ममत्व को त्याग किए।
निज आत्म सुधारस को पाया, निज से निज का ही ध्यान किए॥4॥

जब क्षपक श्रेणी पर चढ़े आप, घाती कर्मों का नाश किया।
श्री चैत्र कृष्ण की तिथि चौथ, प्रभु केवलज्ञान प्रकाश किया॥
शुभ ज्ञान लता फैली जग में, भव्यों को शुभ संदेश दिया।
फिर श्रावण शुक्ल सप्तमी को, प्रभु मोक्ष महल को वरण किया॥5॥

॥इत्याशीर्वादः॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ पूजा

स्थापना

जिनका यश गौरव गूँज रहा, धरती से विशद सितारों तक।
जिनके कारण मंगल होता, आकाश स्वर्ग के द्वारों तक॥
जिनकी गौरव गरिमा गा के, हर मानव खुश हो जाता है।
श्रद्धा से जिनके चरणों में, माथा हर भक्त झुकाता है॥
जो पूज्य हैं तीनों लोकों में, सुरनर करते हैं चरण नमन।
तीर्थंकर पद के धारी जिन, श्री पार्श्वनाथ का आह्वानन्॥

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

जल पीकर के बुझ सकी नहीं, मेरे चेतन की प्यास कभी।
लाखों युग बीत गये रहते, फिर भी जग जीव उदास सभी॥
यह झुलस रहा है तन मेरा, माया तृष्णा के शोलों से।
आराम नहीं पाया हमने, धारण कर तन के चोलों से॥
अब मन का मैल हटाने को, यह निर्मल नीर चढ़ाते हैं।
प्रभु पार्श्वनाथ के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

सूरज के ताप से भी ज्यादा, गरमी मेरे तन मन में है।
शीतलता कैसे मिल पाए, जब आस लगाई धन में है॥
अब भी मन मेरा भटक रहा, पहले सम दिन वा रातें हैं।
क्रोधादि कषायों युक्त मेरी, अब भी चलती सब बातें हैं॥
मन का संताप नशाने को, चन्दन यह श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
प्रभु पार्श्वनाथ के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

जितने भी पद हैं जगती पर, क्षण में क्षय होने वाले हैं।
शिव पथ पर बढ़ने वाले शुभ, राही के सुपद निराले हैं।।
अब निज स्वरूप हमने जाना, अक्षय पद हम भी पाएँगे।
जब तक वह पद ना पा लेंगे, हम द्वार आपके आएँगे।।
हम अक्षय पद पाने पावन, यह अक्षत धवल चढ़ाते हैं।
प्रभु पार्श्वनाथ के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

कोमलता पुष्पों में होती, फिर भी मादकता वाले हैं।
मादकता काम वासना के, संतप्त झकोर कषाले हैं।।
तव दर्शन करके नाथ आज, खुल गये हृदय के ताले हैं।
क्षण भंगुर भोगों के पीछे, हम कब-कब से मतवाले हैं।।
ना काम से हो आहत यह तन, इस कारण पुष्प चढ़ाते हैं।
प्रभु पार्श्वनाथ के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

है क्षुधा रोग से घायल जग, यह रोग बड़ा बलशाली है।
यह रोग मिटाने को कितने, कर दिए कोठरे खाली है।।
यह द्रव्य विशद आशाओं के, ना शांत कभी कर पाते हैं।
अब समझ में आया संतो को, क्यों भोग ना जग के भाते हैं।।
अब जुदा क्षुधा के करने को, नैवेद्य चढ़ा हर्षाते हैं।
प्रभु पार्श्वनाथ के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

अज्ञान महातम के आगे, पड़ जाता सूरज फीका है।
मिथ्यात्व मोह में फँसने से, निज धर्म ना लगता नीका है।।
जो मोह महातम कर विनाश, निश्चल श्रद्धान जगाता है।
तब शिव पथ का राही बनकर, सीधा शिवपुर को जाता है।।

तन मन का तिमिर मिटाने को, यह पावन दीप जलाते हैं।
प्रभु पार्श्वनाथ के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ना कर्त्ता धर्त्ता है कोई, बेकार जीव सब रोते हैं।
संसार मोह के चक्कर में, यह जीवन अपना खोते हैं।।
हैं कर्म आठ के ठाठ बड़े, जीवों पर राज चलाते हैं।
कई ज्ञानवान विद्वान कर्म के, चक्कर में फँस जाते हैं।।
अब अष्ट कर्म का हो विनाश, अग्नी में धूप जलाते हैं।
प्रभु पार्श्वनाथ के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

जब भाग्य उदय में आता तो, पुरुषार्थ हीन पड़ जाता है।
जो करे शुभाशुभ कर्म जीव, उसके ही फल को पाता है।।
पुरुषार्थ भाग्य का द्वंद विशद, सदियों से चलता आया है।
पड़ रहा झमेले में प्राणी, उसने संसार बढ़ाया है। ।
अब शाश्वत शिव फल पाने हम, यह श्रीफल यहाँ चढ़ाते हैं।
प्रभु पार्श्वनाथ के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

है काल अनादी चेतन यह, चिन्मय स्वरूप इसका गाया।
किन्तू पुद्गल के चक्कर में, यह चतुर्गती में भटकाया।।
वह भूल रहा निज शक्ती को, जग में फिरता मारा मारा।
जो है अनन्त ज्ञाता दृष्टा, निज की शक्ती से भी हारा।।
वह पद अनर्घ शाश्वत पाने, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
प्रभु पार्श्वनाथ के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

दोहा **क्षीर सिन्धु के नीर से, देते शांती धार।**
कर्म सताते जो हमे, पूर्ण होंय सब क्षार॥
॥ शान्तये शांतिधारा॥

पुष्पांजलिं को पुष्प यह, ताजे लाए हाथ।
जब तक मुक्ती ना मिले, छूटे ना प्रभु साथ॥
॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

पंच कल्याणक के अर्घ्य

(पद्धरि छन्द)

वैसाख कृष्ण द्वितिया महान, प्राणत से चयकर गर्भ आन।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर प्रधान, जिनके पद पूजें भक्त आन॥
ॐ ह्रीं बैशाखकृष्ण-द्वितीयायां गर्भमंगल-मंडिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

तिथि पौष एकादशि को जिनेश, काशी नगरी जन्मे विशेष।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर प्रधान, जिनके पद पूजें भक्त आन॥
ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगल-मंडिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

तिथि पौष एकादशि सुतपधार, पद पाया तुमने अनागार
श्री पार्श्वनाथ जिनवर प्रधान, जिनके पद पूजें भक्त आन
ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगल-मंडिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

वदिचैत्र चतुर्थी को महान, पाया तुमने कैवल्य ज्ञान।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर प्रधान, जिनके पद पूजें भक्त आन॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-चतुर्थ्यां केवलज्ञान-मंडिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

श्रावण सुदि सातें प्रात काल, शिव पदपाया प्रभु ने त्रिकाल।
श्री पार्श्वनाथ जिनवर प्रधान, जिनके पद पूजें भक्त आन॥
ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ल-सप्तम्यां मोक्षमंगल-मंडिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

जयमाला

दोहा **अहिच्छत्र जी तीर्थ पर, पाये केवलज्ञान।**
जयमाला गाते प्रभू, पाने ज्ञान महान॥

(रेखता छन्द)

ऋषी गणधर सुर नर योगीश, लगाते हैं जिनवर का ध्यान।
सभी संकट कट जाते शीघ्र, करें जो भाव सहित यशगान॥
विषय इन्द्रिय के जीते आप, बने तुम कर्म जयी बलवान।
जानकर नश्वर तन को आप, किए निजआतम की पहिचान॥1॥

गये प्रभु निर्जन वन के बीच, लिया तुमने शुभ संयम धार।
प्राप्त कर तेरह विधि चारित्र, बने निर्ग्रन्थ मुनी अनगार॥
कमठ का जीव बना था देव, गया जंगल की करने सैर।
गिराये ओले शोले नीर, समाया उसके मन में वैर॥2॥

प्रभू की त्याग तपस्या देख, मान ली आखिर उसने हार।
मान मानी का भी उस वक्त, हुआ था क्षण भर में ही क्षार॥
सिंहासन देवों का उस वक्त, स्वर्ग में कंपित हुआ विशेष।
स्वर्ग से चला तभी धरणेन्द्र, नाग का धारा जिसने भेष॥3॥

बिठाया पद्मावति ने शीश, बना कर सिंहासन पर आन।
बनाया फण मण्डप शुभकार, तभी धरणेन्द्र ने वहाँ महान॥
डिगा ना सका जिन्हें उपसर्ग, भक्त बन आये चरणों देव।
विनत होकर के आखिर कार, झुका सर कमठ भी चरणों एव॥4॥

किया दश भव तक जिसने बैर, दिए हैं कष्ट अनेकों बार।
कहा दुखदायी वैर विरोध, नहीं है इसमें कोई सार॥
नहीं जिनको भव सुख की चाह, नहीं दुख से डरते है संत।
प्राप्त कर सर्व सिद्धियाँ आप, पूर्ण कर देते भव का अंत॥5॥

परीषह से खेले वह खेल, मनोबल जिनका रहा विशुद्ध।
प्राप्त कर निर्विकल्प चारित्र, स्वयं ध्याते हैं आतम शुद्ध॥
कर्म का करके पूर्ण विनाश, जगाते हैं वह केवलज्ञान।
'विशद' ज्ञानी बनकर के आप्त, प्राप्त करके हैं पद निर्वाण॥6॥

भक्त जो आते चरण समीप, कर्म उनसे रहते हैं दूर।
सम्पदा पाते वे बहुमूल्य, सौख्य पाते भव के भरपूर॥
करें जो पूजा आदि विधान, उन्हें निधियाँ मिलती स्वमेव।
पड़े संकट कोई भी आन, हरें कई भक्त आन के देव॥7॥
बने समदर्शी तुम भगवान, कहाते प्रभु त्रैलोकी नाथ।
हुए कई अतिशय चरण महान, भक्त तव चरण झुकाते माथ॥
किसी को देते ना कुछ आप, लोग फिर भी फल पाते एव।
वृक्ष के नीचे शीतल छाँव, प्राप्त कर लेते ज्यों स्वमेव॥8॥
पार्श्वमणि को छूकर ज्यों लोह, स्वयं हो जाता स्वर्ण समान।
करें जो चरणों को स्पर्श, जीव वह बने स्वयं भगवान॥
प्रभु ने अपनाया जो पंथ, खोलता वह शिव पथ का द्वार।
चले इस पथ पर जो भी जीव, मिले उसको भी यह उपहार॥9॥

दोहा **पार्श्वमणि सम लोक में, पार्श्व नाथ भगवान।**
चरण शरण के भक्त को, करते स्वयं समान॥

ॐ ह्रीं उपसर्गजयी श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा **पार्श्व प्रभु के चरण में, पूरी होती आश।**
''विशद'' ऋद्धि सिद्धि मिले, है पूरा विश्वास॥
॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्॥

प्रथम वलयः

दोहा **पार्श्वनाथ जिन ने किए, आठों कर्म विनाश।**
पुष्पांजलि करते विशद, हो कर्मों का नाश॥
(अथ प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥)

स्थापना

जिनका यश गौरव गूँज रहा, धरती से विशद सितारों तक।
जिनके कारण मंगल होता, आकाश स्वर्ग के द्वारों तक॥
जिनकी गौरव गरिमा गा के, हर मानव खुश हो जाता है॥
श्रद्धा से जिनके चरणों में, माथा हर भक्त झुकाता है।

जो पूज्य हैं तीनों लोकों में, सुरनर करते हैं चरण नमन॥
तीर्थंकर पद के धारी जिन, श्री पार्श्वनाथ का आह्वानन्॥

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्राननम्।
ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्ट कर्म विनाशक जिन

पद्धड़ि छन्द

प्रभु ज्ञानावरणी कर्म नाश, फिर करें ज्ञान केवल प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥1॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म विघातकाय तथैव कर्मनाशन शक्ति प्रदाय सम्यक्त्व गुण सहिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन कर्म दर्शनावरण नाश, प्रभु करें दर्श क्षायिक प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥2॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म विघातकाय तथैव कर्मनाशन शक्ति प्रदाय सम्यक्त्व गुण सहिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब करें वेदनीय का विनाश, गुण अव्याबाध में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥3॥

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म विघातकाय तथैव कर्मनाशन शक्ति प्रदाय सम्यक्त्व गुण सहिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह कर्म से रहे हीन, जो सुखानन्त में रहें लीन।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥4॥

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म विघातकाय तथैव कर्मनाशन शक्ति प्रदाय सम्यक्त्व गुण सहिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन आयु कर्म का कर विनाश, अवगाहन गुण में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥5॥

ॐ ह्रीं आयुकर्म विघातकाय तथैव कर्मनाशन शक्ति प्रदाय सम्यक्त्व गुण सहिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु नाम कर्म करते विनाश, सूक्ष्मत्व सुगुण करते प्रकाश।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥6॥

ॐ ह्रीं नाम कर्म विघातकाय तथैव कर्मनाशन शक्ति प्रदाय सम्यक्त्व गुण सहिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना गोत्र कर्म का रहा काम, गुण पाए अगुरुलघु रहा नाम।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥7॥

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म विघातकाय तथैव कर्मनाशन शक्ति प्रदाय सम्यक्त्व गुण सहिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अन्तराय करके विनाश, जिन वीर्यानन्त में करें वास।
अब करो भवार्णव मुझे पार, हम करते सादर नमस्कार॥8॥

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म विघातकाय तथैव कर्मनाशन शक्ति प्रदाय सम्यक्त्व गुण सहिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा **आठों कर्म विनाश कर, गुण प्रगटाए आठ।**
पार्श्व प्रभु के भक्त जन, पाते ऊँचे ठाठ॥

ॐ ह्रीं अष्टकर्म विनाशकाय तथैवकर्म नाशन शक्ति प्रदाय सम्यक्तवादि प्रमुख अष्ट सिद्धगुण समन्विताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

द्वितीय वलयः

दोहा **तीर्थंकर पद प्राप्त कर, हुए आप निर्दोष।**
शिव पद के राही बने, गुण अनन्त के कोष॥

(अथ द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

जिनका यश गौरव गूँज रहा, धरती से विशद सितारों तक।
जिनके कारण मंगल होता, आकाश स्वर्ग के द्वारों तक॥
जिनकी गौरव गरिमा गा के, हर मानव खुश हो जाता है॥
श्रद्धा से जिनके चरणों में, माथा हर भक्त झुकाता है।

जो पूज्य हैं तीनों लोकों में, सुरनर करते हैं चरण नमन॥
तीर्थंकर पद के धारी जिन, श्री पार्श्वनाथ का आह्वानन्॥

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

अष्टादश दोष रहित जिन

तोटक छंद

प्रभु पार्श्वनाथ जिनराज भये, तव क्षुधा रोग को पूर्ण क्षये।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें॥1॥

ॐ ह्रीं क्षुधा महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तृषा दोष का नाश किए, जिन केवल ज्ञान प्रकाश किए।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें॥2॥

ॐ ह्रीं तृषा महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय दोष महा दुखदाय रहा, इसको नाशे प्रभु पूर्ण अहा।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें॥3॥

ॐ ह्रीं भय महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता में चित्त मलीन रहे, यह दोष प्रभु को नहीं रहे।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें॥4॥

ॐ ह्रीं चिंता महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जन्म दोष के नाशक हैं, जिन चेतन सुगुण प्रकाशक हैं।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें॥5॥

ॐ ह्रीं जन्म महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जरा दोष को दूर किए, निज चेतन का आनन्द लिए।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।6।।
ॐ ह्रीं जरा महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है राग आग सम दोष महा, जिनवर को वह भी रहे कहाँ।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।7।।
ॐ ह्रीं राग महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह दोष का घात करें, जो कर्म शत्रु को मात करें।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।8।।
ॐ ह्रीं मोह महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मृत्यु के जयवान कहे, जिन अजर अमर भगवान रहे।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।9।।
ॐ ह्रीं मृत्यु महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके ना तन से स्वेद बहे, निर्दोष जिनेश्वर आप कहे।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।10।।
ॐ ह्रीं स्वेद महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके ना खेद विषाद रहा, ऐसे जिन हैं जगपूज्य अहा।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।11।।
ॐ ह्रीं खेद महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो आप महा मद हीन प्रभो!, निज गुण में रहते लीन विभो।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।12।।
ॐ ह्रीं मद महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है शोक दोष का काम नहीं, प्रभु रहें जहाँ हों पूज्य वहीं।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।13।।
ॐ ह्रीं शोक महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु विस्मय दोष विनाशक हैं, निज में निज के ही शासक हैं।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।14।।
ॐ ह्रीं विस्मय महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन निद्रा दोष स्वयं नशते, जन-जन के उर में जा बसते।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।15।।
ॐ ह्रीं निद्रा महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अरति दोष परिहार करें, निज के सारे जो दोष हरें।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।16।।
ॐ ह्रीं अरति महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु द्वेष पूर्णतः आप नशे, फिर सिद्ध शिला पर आप बसे।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।17।।
ॐ ह्रीं द्वेष महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु रोग दोष का नाश किए, फिर निज स्वभाव में वास किए।
उनके चरणों हम ध्यान करें, भव रोग अनादी पूर्ण हरें।।18।।
ॐ ह्रीं रोग महादोष रहिताय तथैव दोषनाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा **दोष अठारह का प्रभु, करके पूर्ण विनाश।**
कर्म घातियाँ नाश कर, कीन्हें ज्ञान प्रकाश।।
ॐ ह्रीं अष्टादश महादोष रहिताय तथैव दोष नाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलय

दोहा **छियालिस पाये मूलगुण, पार्श्वनाथ भगवान।**
तव गुण गाने के लिए, करें आपका ध्यान॥

(अथ तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

जिनका यश गौरव गूँज रहा, धरती से विशद सितारों तक।
जिनके कारण मंगल होता, आकाश स्वर्ग के द्वारों तक॥
जिनकी गौरव गरिमा गा के, हर मानव खुश हो जाता है॥
श्रद्धा से जिनके चरणों में, माथा हर भक्त झुकाता है।
जो पूज्य हैं तीनों लोकों में, सुरनर करते हैं चरण नमन॥
तीर्थंकर पद के धारी जिन, श्री पार्श्वनाथ का आह्वानन्॥

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्राननम्।
ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

जन्म के दस अतिशय

(चौपाई)

स्वेद रहित तन पाते स्वामी, तीर्थंकर जिन अन्तर्यामी।
पार्श्व प्रभु की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते॥1॥

ॐ ह्रीं स्वेद रहित सहजातिशय धारक सम्यक्दर्शन फलदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

निर्मल सहज प्रभु तन पाते, जो मल मूत्र कभी ना जाते।
पार्श्व प्रभु की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते॥2॥

ॐ ह्रीं निहार रहित सहजातिशय धारक सम्यक्दर्शन फलदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रुधिर स्वेत है जिनका भाई, वात्सल्य की है प्रभुताई।
पार्श्व प्रभु की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्वेत रुधिर सहजातिशय धारक सम्यक्दर्शन फलदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

समचतुम्र संस्थान बताया, सुन्दर जो सबके मन भाया।
पार्श्व प्रभु की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते॥4॥

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशय धारक सम्यक्दर्शन फलदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

श्रेष्ठ संहनन प्रभु जी पाए, वज्रवृषभ नाराच कहाए।
पार्श्व प्रभु की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते॥5॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशय धारक सम्यक्दर्शन फलदाय अहिच्छत्र श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

मन मोहक है रूप निराला, जन-जन का मन हरने वाला।
पार्श्व प्रभु की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते॥6॥

ॐ ह्रीं अतिशय रूप सहजातिशय धारक सम्यक्दर्शन फलदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

रहा सुगन्धित तन शुभकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।
पार्श्व प्रभु की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते॥7॥

ॐ ह्रीं सुगन्धित तन सहजातिशय धारक सम्यक्दर्शन फलदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सहम्र आठ शुभ लक्षण धारी, तीर्थंकर जिन मंगलकारी।
पार्श्व प्रभु की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते॥8॥

ॐ ह्रीं सहस्राष्ट शुभ लक्षण सहजातिशय धारक सम्यक्दर्शन फलदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

बल अनन्त के धारी जानो, जन्म का अतिशय प्रभु का मानो।
पार्श्व प्रभु की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते॥9॥

ॐ ह्रीं अतुल्य बल सहजातिशय धारक सम्यक्दर्शन फलदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रिय हित वचन मधुर मनहारी, प्रभू बोलते विस्मयकारी।
पार्श्व प्रभु की महिमा गाते, अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाते॥10॥

ॐ ह्रीं हितमित प्रिय वचन सहजातिशय धारक सम्यक्दर्शन फलदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

केवलज्ञान के दस अतिशय

(सखी छन्द)

सौ योजन सुभिक्ष हो भाई, है जिनवर की प्रभुताई।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।।11।।

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सूभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय धारक केवलज्ञानातिशय गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु होते गगन विहारी, इस जग में मंगलकारी।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।।12।।

ॐ ह्रीं आकाश गमन घातिक्षयजातिशय धारक केवलज्ञानातिशय गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु अदया भाव नशाते, शुभ दया भाव प्रगटाते।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।।13।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षयजातिशय धारक केवलज्ञानातिशय गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हैं कवलहार के त्यागी, निज चेतन के अनुरागी।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।।14।।

ॐ ह्रीं कवलाहाराभाव घातिक्षयजातिशय धारक केवलज्ञानातिशय गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

उपसर्ग रहित जिन स्वामी, होते हैं शिवपथ गामी।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।।15।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभावघातिक्षयजातिशय धारक केवलज्ञानातिशय गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हो चतुर्दिशा से भाई, जिनका दर्शन सुखदायी।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।।16।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय धारक केवलज्ञानातिशय गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु विशद ज्ञान शुभ पाए, जिन विद्येश्वर कहलाए।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षयजातिशय धारक केवलज्ञानातिशय गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

प्रभु छाया रहित निराले, हैं मूर्तिमान तन वाले।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।।18।।

ॐ ह्रीं छाया रहित घातिक्षयजातिशय धारक केवलज्ञानातिशय गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नहि नयनों में टिमकारी, नाशा दृष्टी है प्यारी।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।।19।।

ॐ ह्रीं अक्षस्पंद रहित घातिक्षयजातिशय धारक केवलज्ञानातिशय गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

नख केश ना वृद्धी पाते, ज्यों के त्यों ही रह जाते।
प्रभु पार्श्वनाथ शिवगामी, अतिशय ये पाए नामी।।20।।

ॐ ह्रीं समान नख केशत्व घातिक्षयजातिशय धारक केवलज्ञानातिशय गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देवोपुनीत चौदह अतिशय

(भुजंगप्रयात छन्द)

है अर्ध मागधी भाषा, अतिशय देवों का खासा।
गुण पार्श्व प्रभू के गाते, पद सादर शीश झुकाते।।21।।

ॐ ह्रीं अर्धमागधी भाषा देवोपुनीतातिशय धारक सम्यक् चारित्र फलप्रदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सब जीव मित्रता पावें, अतिशय जिनवर प्रगटावें।
गुण पार्श्व प्रभू के गाते पद सादर शीश झुकाते।।22।।

ॐ ह्रीं सर्व मैत्री भाव देवोपुनीतातिशय धारक सम्यक् चारित्र फलप्रदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

निर्मल हों दशों दिशाएँ, जिन देव जहाँ पर जाएँ।
गुण पार्श्व प्रभू के गाते पद सादर शीश झुकाते।।23।।

ॐ ह्रीं सर्व दिशा निर्मल घातिक्षय देवोपुनीतातिशय धारक सम्यक् चारित्र फलप्रदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

षट् ऋतु के सुमन खिलाते, जिन पर जँह आते जाते।
गुण पार्श्व प्रभू के गाते पद सादर शीश झुकाते।।24।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु देवोपुनीतातिशय धारक देवोपुनीतातिशय धारक सम्यक् चारित्र फलप्रदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

भू रत्नमयी हो जावे, दर्पण सम शोभा पावे।
गुण पार्श्व प्रभू के गाते पद सादर शीश झुकाते।।25।।

ॐ ह्रीं आदर्श तल प्रतिमा रत्नमही देवोपुनीतातिशय धारक सम्यक् चारित्र फलप्रदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हो गगन सुनिर्मल भाई, ज्यों शरद ऋतू हो आई।
गुण पार्श्व प्रभू के गाते पद सादर शीश झुकाते।।26।।

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गगन देवोपुनीतातिशय धारक सम्यक् चारित्र फलप्रदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

(भुजंग प्रयात)

चले श्रेष्ठ सुरभित पवन सौख्यदायी,
प्रभु के चरण की ये महिमा बताई।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभु जी कहाते हैं अतिशय के धारी।।27।।

ॐ ह्रीं सुगन्धित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपुनीतातिशय धारक सम्यक् चारित्र फलप्रदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

परम श्रेष्ठ आनन्द पाते हैं प्राणी,
ये अतिशय भी होता कहे जैनवाणी।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभु जी कहाते हैं अतिशय के धारी।।28।।

ॐ ह्रीं सर्वानन्दकारक देवोपुनीतातिशय धारक सम्यक् चारित्र फलप्रदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

हो भू स्वच्छ निर्मल परम सौख्यदायी,
रहे धूल कंटक जरा भी ना भाई।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभु जी कहाते हैं अतिशय के धारी।।29।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपुनीतातिशय धारक सम्यक् चारित्र फलप्रदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

करें देव गंधोदक की श्रेष्ठ वृष्टि
हो आनन्दमय सर्वदिशा सर्व सृष्टि।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभु जी कहाते हैं अतिशय के धारी।।30।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृत गंधोदक वृष्टि देवोपुनीतातिशय धारक सम्यक् चारित्र फलप्रदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चरण तल कमल देव रचते है भाई,
दिखे श्रेष्ठ अनुपम परम सौख्यदायी।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभु जी कहाते हैं अतिशय के धारी।।31।।

ॐ ह्रीं चरणकमलतल रचित स्वर्ण कमल देवोपुनीतातिशय धारक सम्यक् चारित्र फलप्रदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

करे देव जय घोष आके निराले,
चारों निकायों के खुश होने वाले।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभु जी कहाते हैं अतिशय के धारी।।32।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपुनीतातिशय धारक सम्यक् चारित्र फलप्रदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

धरम चक्र यक्षेन्द्र सिर पे सम्हाले,
जो खुश होके चऊदिश में आगे ही चाले।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभु जी कहाते हैं अतिशय के धारी।।33।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्र चतुष्टय देवोपुनीतातिशय धारक सम्यक् चारित्र फलप्रदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

जो मंगलमयी द्रव्य हैं अष्ट भाई,
ध्वजा छत्र कलशादि हैं सौख्यदायी।
अतिशय ये देवोंकृत है सौख्यकारी,
प्रभु जी कहाते हैं अतिशय के धारी।।34।।

ॐ ह्रीं अष्ट मंगल द्रव्य देवोपुनीतातिशय धारक सम्यक् चारित्र फलप्रदाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय

(सखी छन्द)

प्रभु ज्ञानावरण नशाते, फिर केवलज्ञान जगाते।
हम वन्दन करने आये, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए।।35।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान गुण प्राप्त श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु कर्म दर्शनावरणी, नाशे हैं भव से तरणी।
हम वन्दन करने आये, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए।।36।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन गुण प्राप्त श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं मोह कर्म के नाशी, जिन सुखानन्त प्रतिभासी।
हम वन्दन करने आये, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए।।37।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुख गुण प्राप्त श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु अन्तराय को नाशे, बलवीर्य अनन्त प्रकाशे।
हम वन्दन करने आये, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए।।38।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य गुण प्राप्त श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य

(आडिल्य छन्द)

प्रातिहार्य सुर वृक्ष प्रथम जिन पाए हैं,
मरकत मणि सम जन जन के मन भाए हैं

केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।।39।।

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत्प्रातिहार्य गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पुष्प वृष्टि कर देव सभी हर्षाए हैं,
तीर्थंकर की महिमा जो दिखलाए हैं।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।।40।।

ॐ ह्रीं सुर पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्य गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चौंसठ चॅवर ढौरने वाले देव हैं,
तीर्थंकर प्रकृति पाते जिनदेव हैं।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।।41।।

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठि चामर सत्प्रातिहार्य गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

कोटि सूर्य सम भामण्डल की कांति है,
जिन चरणों में मिटती मन की भ्रांति है।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।।42।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्य गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

देव दुन्दुभी बजती मंगलकार है,
जिन महिमा का मानो यह उपहार है।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।।43।।

ॐ ह्रीं देव दुन्दुभी सत्प्रातिहार्य गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

तीन छत्र सिर के ऊपर दिखलाए हैं,
तीन लोक के प्रभु हैं यह बतलाए हैं।

केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।।44।।

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सत्प्रातिहार्य गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि तिय कालों में खिरती अहा,
प्रातिहार्य यह भी इक जिनवर का रहा।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।।45।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्य गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

सिंहासन पर जिन महिमा दिखलाए हैं,
प्रातिहार्य जिनवर के अनुपम गाए हैं।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।।46।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्य गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चौंतिस अतिशय प्रातिहार्य वसु पाए हैं,
अनन्त चतुष्टय जिनानन्त प्रगटाए हैं।
केवलज्ञानी की महिमा मनहार है,
सारे जग में अतिशय जो शुभकार है।।47।।

ॐ ह्रीं षड् चत्त्वारिशंद् गुण मण्डिताय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा **कष्टों में जीते विशद, उनके दुख हों दूर।**
पार्श्व प्रभु को पूजते, मिले सौख्य भरपूर।।

(चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

जिनका यश गौरव गूँज रहा, धरती से विशद सितारों तक।
जिनके कारण मंगल होता, आकाश स्वर्ग के द्वारों तक।।
जिनकी गौरव गरिमा गा के, हर मानव खुश हो जाता है।।
श्रद्धा से जिनके चरणों में, माथा हर भक्त झुकाता है।
जो पूज्य हैं तीनों लोकों में, सुरनर करते हैं चरण नमन।।
तीर्थंकर पद के धारी जिन, श्री पार्श्वनाथ का आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

संकट निवारक 48 अर्घ्य

।। चौपाई ।।

अति वृष्टी जग में दुखदायी, मरें बाढ़ से प्राणी भाई।
तुम्हें भक्त जो पूज रचावें, अतिवृष्टि से मुक्ती पावें।।1।।

ॐ ह्रीं अति वृष्टि उपद्रव नाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनावृष्टि में मेघ ना बरसें, जल को जग के प्राणी तरसें।
तुम्हें भक्त जो पूज रचावें, अनावृष्टि से मुक्ती पावें।।2।।

ॐ ह्रीं अनावृष्टि उपद्रव नाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हों दुर्भिक्ष अकाल निराले, जीवों को दुख देने वाले।
तुम्हें भक्त जो पूज रचावें, दुर्भिक्षों से मुक्ती पावें।।3।।

ॐ ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रव नाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चोर लुटेरे धन ले जावें, प्राणी हा हाकार मचावें।
पार्श्व प्रभु को पूँज रचाते, बाधाओं से मुक्ती पाते।।4।।

ॐ ह्रीं चोर लुंटाकादि नाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छापा टैक्स आदि के द्वारा, अधिकारी धन लूटें सारा।
पार्श्व प्रभु को पूज रचाओ, आपत्ती से मुक्ती पाओ।।5।।

ॐ ह्रीं आयकरादिराज्य भयोपद्रव नाशन समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रम करके भी धन ना पायें, जिनको भी दरिद्रि सतायें।
पार्श्व प्रभु को पूजा रचावें, सब दरिद्र से मुक्ती पावें।।6।।

ॐ ह्रीं दारिद्रदु:ख विनाशकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग जरादिक जिन्हें सताए, औषधि भी कोइ काम ना आए।
रोग नाश होते दुखदायी, पूजा करने से वह भाई।।7।।

ॐ ह्रीं ज्वरमूल रोगादि निवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुष्ट कामलादिक दुखदायी, रोग जलोदर होवे भाई।
इन सबसे भी मुक्ती पाएँ, पार्श्वनाथ को पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं कामला कुष्ठ जलोदर भंगदरादिव्याधि नाशकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र रोग से जो दुख पावे, औषधि कोई काम ना आवे।
पार्श्वनाथ को पूजे भाई, संकट में प्रभु बनें सहाई।।9।।

ॐ ह्रीं नाना विध नेत्र रोग विनाशकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हृदय रोग से पीड़ा पाते, धन खर्चा कर भी मर जाते।
पूजे जिनवर को जो प्राणी, रोग से मुक्ती पावें ज्ञानी।।10

ॐ ह्रीं हृदय रोग पीड़ा निवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैन्सरादि प्राणों के घाती, और कोई क्षय रोग की भांति।
इनसे प्राणी मुक्ती पावें, पार्श्व प्रभु को पूज रचावें।।11।।

ॐ ह्रीं प्राणघाति कैंसर महाव्याधि विनाशकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कुरूपता से दुख पाते, चर्म रोग भी जिन्हें सताते।
जिन पूजा से मुक्ती पाते, सुन्दर रूप जीव प्रगटाते।।12।।

ॐ ह्रीं कुरुपादि कष्ट निवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(भुजंत प्रयात छन्द)

स्त्री स्वजन आदि प्रिय जो कहाए,
दुखद वियोग कदाचित्त् उनका हो जाए।
श्री पार्श्व जिन की जो पूजा रचाए,
अतिशीघ्र मुक्ती इस संकट से पाए।।13।।

ॐ ह्रीं प्राणघातक इष्ट वियोग दु:ख नाशकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रू सम भार्या स्वजनादि होवें,
इनसे वियोग की चिंता में रोवें।
श्री पार्श्व जिन की जो पूजा रचाएँ,
अतिशीघ्र मुक्ती इस संकट से वो पाएँ।।14।।

ॐ ह्रीं अनिष्ट संयोग महादु:ख निवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यापार या घर की चिन्ता सताए,
पीड़ित हो मन में कोई आकुलता आए।
श्री पार्श्व जिनकी जो पूजा रचाए,
अतिशीघ्र मुक्ती इस संकट से पाए।।15।।

ॐ ह्रीं सर्व मानसिकता विनाशकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों से प्रिय बोले पर को ना भावें,
जिह्वा के रोगादिक कोई सतावें।
श्री पार्श्व जिन की जो पूजा रचाए,
अतिशीघ्र मुक्ती इस संकट से पाए।।16।।

ॐ ह्रीं सर्व वाचनिक कष्ट निवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायिक दुखों से जो प्राणी सताए,
नाना विध कष्टों को जो ना सह पाए।
श्री पार्श्व जिन की जो पूजा रचाए,
अतिशीघ्र मुक्ती इस संकट से पाए।।17।।

ॐ ह्रीं नाना विध कायिककष्ट शातनाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायुयान में भी दुर्घटना हो जावे,
मरणान्त पीड़ा भी आके सतावें।
श्री पार्श्व जिन की जो पूजा रचाए,
अतिशीघ्र मुक्ती इस संकट से पाए।।18।।

ॐ ह्रीं सर्ववायुयान दुर्घटनाकष्ट निवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो रेलयात्रा की बाधा सताए,
दुर्घटना आदिक की बाधा हो जाए।
श्री पार्श्व जिन की जो पूजा रचाए,
अतिशीघ्र मुक्ती इस संकट से पाए।।19।।

ॐ ह्रीं सर्व लोहपथ गामिनी दुर्घटनादि भय निवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बस कार ट्रक आदि यात्रा में जावे,
दुर्घटना आदिक का भय जो सतावे।
श्री पार्श्व जिन की जो पूजा रचाए,
अतिशीघ्र मुक्ती इस संकट से पाए।।20।।

ॐ ह्रीं सर्वचतुष्चक्रिका दुर्घटनादि संकट मोचनाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सखी छन्द)

त्रय चक्री वाहन भाई, टकरा जावे दुखदायी।
जो पार्श्व प्रभु को ध्यायें, उन संकट कट जाए।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वत्रिचक्रिका दुर्घटनादि कष्ट निवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो चक्री वाहन जानो, टक्कर खा जावें मानो।
वे इससे भी बच जावें, जो प्रभु को पूज रचावें।।22।।

ॐ ह्रीं सर्वद्विचक्रिका दुर्घटनांतक निवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूकम्प आदि की भारी, दुर्घटना हो दुखकारी।
प्रकृति प्रकोप ना आए, जो प्रभु को पूज रचाए।।23।।

ॐ ह्रीं भूकम्पदुर्घटना निवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकस्मिक जल बढ़ जाए, सरिता का पूर सताए।
इससे प्राणी बच जाते, जो प्रभु को पूज रचाते।।24।।

ॐ ह्रीं नदीपूर प्रवाह संकट मोचनाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नहर समुद्र सरिताएँ, इसमें प्राणी गिर जाएँ।
प्रभु नाम मंत्र जो ध्याते, इस संकट से बच जाते।।25।।

ॐ ह्रीं नदी समुद्रादिपत कष्ट निवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिच्छू सर्पादि सताएँ, जब वैद्य भी काम ना आएँ।
तब पार्श्व प्रभु की भक्ती, दुख से दिलवाए मुक्ती।।26।।

ॐ ह्रीं वृश्चिक सर्पादिविषधर विषनिर्णाशनाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंह व्याघ्र क्रूर अष्टापद, हिंसक प्राणी की आपद।
जो प्रभु को पूज रचाए, उसकी क्षण में नश जाए।।27।।

ॐ ह्रीं अष्टापद व्याघ्र सिंहादिक्रूर हिंसकजंतु भय निवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गज अश्व बैल भैंसादी, सींगों वाले मैढ़ादी।
जब मारें भय दिखलाएँ, निर्भय हो जिनको ध्याएँ।।28।।

ॐ ह्रीं गजाश्वगोवृषभादि प्राणी गण भय विनाशकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छन्द

हो क्षरण विषाक्त गैसादी, जिससे हो आधी-व्याधी।
नर पशु के संकट सारे, जिन भक्ती शीघ्र निवारे।।29।।

ॐ ह्रीं विषाक्तवाष्पक्षरणादि संकटवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो गैस रसोई वाले, रिसते फट जाएँ निराले।
जो जिन को पूज रचाते, उनके संकट टल जाते॥30॥

ॐ ह्रीं वाष्प चुल्लिकादि दुर्घटना कष्ट निवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बम अकस्मात फट जावे, या संकट कोई आवे।
जो जिन पद पूज रचाए, ना संकट उसे सताए॥31॥

ॐ ह्रीं बम विस्फोटकादि आकस्मिक संकट निवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतंकवादि जन द्वारा, भय नशे आकस्मिक सारा।
जो पार्श्व प्रभु को ध्यायें, उनके संकट कट जाएँ॥32॥

ॐ ह्रीं आतंकवादिजनकृत आकस्मिक मरणादिभय विनाशकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है सुता जन्म भयकारी, डर है दहेज का भारी।
वे नर निर्भय हो जावें, जो पार्श्व प्रभु को ध्यावें॥33॥

ॐ ह्रीं बालिका जन्म कष्ट निवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन मन का कष्ट सताए, विष खा मरने को जाए।
तरु कूप गिरे बच जाए, जो मन से प्रभु को ध्याये॥34॥

ॐ ह्रीं कूप नदी पतन विषादि भक्षण निमित्तापघात भाव निवारणाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना विधि दुर्घटनाएँ, जिन्हें मृत्यु अकाल सताएँ।
वे भी प्राणी बच जाते, जो पार्श्व प्रभु को ध्याते॥35॥

ॐ ह्रीं नानाविध दुर्घटनादिनाकाल मृत्यु निवारणाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यन्तर पिशाच भूतादी, शाकिन डाकिन ग्रह आदी।
इनकी बाधा हो भारी, अर्चा कर नसती सारी॥36॥

ॐ ह्रीं भूतपिशाचव्यंतरादि बाधा निवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जोगीरासा छन्द

किंचित् श्रम कर मिले सफलता, सब व्यापार सफल हो।
पुण्य उदय से धन वैभव पा, जीवन भी मंगल हो॥

पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी॥37॥

ॐ ह्रीं बहुविध व्यापार सफलता कारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गृह लक्ष्मी अनुकूल रहे जो, पति की हो अनुगामी।
पतिव्रता हो स्वयं के पति को, माने अपना स्वामी॥
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी॥38॥

ॐ ह्रीं उभय कुल कमल विकासिन धर्म पत्नि प्रापक पुण्य प्रदायकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुत्र पौत्र संतति चलती है, होते आज्ञाकारी।
मात पिता की कीर्ति बढ़ाते, होते हैं उपकारी॥
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी॥39॥

ॐ ह्रीं पुत्र पौत्रादिकुल दीपक संतति प्रापकपुण्यदायकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीर्घ आयु पाते हैं प्राणी, शुभ भावों के धारी।
इन्द्र नरेन्द्र सुपद पाते हैं, पर भव मंगलकारी॥
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी॥40॥

ॐ ह्रीं दीर्घायु प्रापक पुण्य प्रदायकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कीर्ति फैले चतुर्दिशा में, सद गुण पावें प्राणी।
रत्नत्रय जिन धर्म प्राप्त कर, बोलें मीठी वाणी॥
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी॥41॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिक कीर्ति सौरभ व्यापक पुण्य प्रापकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राज्य मान्यता प्राप्त करें नर, जन-जन का मन मोहें।
गुण गाते सब उनके प्राणी, जो मंगल मय सोहें॥
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी॥42॥

ॐ ह्रीं राज्य मान्यतादिप्रशंसन गुणप्रापक पुण्य दायकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग जन जिनकी आज्ञा पालें, ऐसी गरिमा पाते।
इन्द्रादिक सम वैभव पावें, जग जन महिमा गाते॥
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी॥43॥

ॐ ह्रीं आज्ञापालन विभव प्रदायकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्त्तादि दुर्ध्यान छोड़कर, अन्त समाधी पावें।
राग द्वेष मोहादि कषायों, के जो भाव नशावें॥
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी॥44॥

ॐ ह्रीं अन्त्यसमाधी मरण फल प्रदाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण है, जग में मोक्ष प्रदायी।
निश्चय औ व्यवहार मार्ग में, कारण होवे भाई॥
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी॥45॥

ॐ ह्रीं व्यवहार निश्चय रत्नत्रय प्रदायकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमा आदि धर्मों को, धारण करने वाले।
शिव पथ के राही बनते हैं, जग में जीव निराले॥
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी॥46॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदश धर्म प्रदायकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श विशुद्धी आदिक सोलह, श्रेष्ठ भावना भाते।
तीर्थंकर पद की कारण हैं, इन में रुची बढ़ाते॥
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी॥47॥

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धयादि सोलह कारण भावना फल प्रदाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहिरातम अन्तर परमातम, जीव त्रिविध के गाये।
स्वपर भेद ज्ञानी मुनि बनकर, परमातम पद पाए॥
पार्श्व प्रभू की पूजा से, यह जीवन हो शुभकारी।
जीवन में संकट कोई हो, बाधा टलती सारी॥48॥

ॐ ह्रीं अन्तरात्म स्वरूपनिज शुद्धात्म ध्यानकारिपद प्रदाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

अतिवृष्टि अनावृष्टी आदिक, दुर्भिक्ष ज्वरादी दुखकारी।
भूकम्प दरिद्रादिक होवे या, तन में पीड़ा होवे भारी॥
श्री पार्श्व नाथ की पूजा से, सारे संकट टल जाते हैं।
जो ऋद्धि वृद्धि समृद्धि पा, अपना सौभाग्य जगाते हैं॥

ॐ ह्रीं अति वृष्टि अनावृष्ट्यादि विविध संकट निवारकाय समर्थाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ तीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलय

दोहा **गणधर दश थे आपके, जग में मंगलकार।**
पुष्पांजलिं करते विशद, वन्दन कर शत्बार॥
(अथ पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

स्थापना

जिनका यश गौरव गूँज रहा, धरती से विशद सितारों तक।
जिनके कारण मंगल होता, आकाश स्वर्ग के द्वारों तक॥
जिनकी गौरव गरिमा गा के, हर मानव खुश हो जाता है॥
श्रद्धा से जिनके चरणों में, माथा हर भक्त झुकाता है।
जो पूज्य हैं तीनों लोकों में, सुरनर करते हैं चरण नमन॥
तीर्थंकर पद के धारी जिन श्री पार्श्वनाथ का आह्वानन्॥

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

श्री पार्श्वनाथ जी के गणधर

(ताटंक छन्द)

पार्श्वनाथ जिन हुए 'स्वयंभू', प्रगटाए जब केवलज्ञान।
गणधर प्रथम स्वयंभू पाए, झेले दिव्य ध्वनि गुणवान॥
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान॥1॥

ॐ ह्रीं स्वयंभू गणधर वंदित चरण कमलाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हली' नाम के गणधर गाए, पार्श्वनाथ के जगत महान।
आतम ध्यान लगाने वाले, करते हैं निज का कल्याण॥
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान॥2॥

ॐ ह्रीं हली गणधर वंदित चरण कमलाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनेन्द्र के चरण कमल में, नत होते जो प्रातः शाम।
विनय भाव से करें वन्दना, 'नतबल' रहा आपका नाम॥
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान॥3॥

ॐ ह्रीं नतबल गणधर वंदित चरण कमलाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नील गगन में पार्श्व प्रभु के, दर्शन से हो गालित मद।
अर्चा करने वाले गणधर, पार्श्व प्रभु के 'नीलाङ्गद'॥
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान॥4॥

ॐ ह्रीं नीलाङ्गद गणधर वंदित चरण कमलाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वप्रभू के गणधर पावन, महानील है जिनका नाम।
चरण वन्दना करें भाव से, जिनके चरणों विशद प्रणाम॥
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं महानील गणधर वंदित चरण कमलाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम पुरुष श्रद्धा के धारी, करते हैं जिनका अर्चन।
गणधर बनकर के 'पुरुषोत्तम', करें प्रभु पद अभिनन्दन॥
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान॥6॥

ॐ ह्रीं पुरुषोत्तम गणधर वंदित चरण कमलाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपसर्गों में समताधारी, निज स्वरूप का करके ध्यान।
केवलज्ञानी हुए पार्श्व जिन, गणधर जिनके रहे 'भृनान'॥
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान॥7॥

ॐ ह्रीं भृनान गणधर वंदित चरण कमलाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल सम्यक् दर्शन धारी, गणधर हैं 'सम्यक्त' महान।
पार्श्व प्रभु के भक्त बने जो, गणधर गुण रत्नों की खान॥
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान॥8॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त गणधर वंदित चरण कमलाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर बने 'देवगन' प्रभु के, प्रगटाए जो चारों ज्ञान।
जिन अर्चा करते हैं नित प्रति, पाने वीतराग विज्ञान॥
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान॥9॥

ॐ ह्रीं देवगन गणधर वंदित चरण कमलाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय गोचर तन होता है, चेतन रहा इन्द्रियातीत।
गणी 'ज्ञानगोचर' जी रखने, वाले हुए आत्म से प्रीत॥
चरण कमल की अर्चा करने, में तत्पर जो रहे प्रधान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, उनका हम करते गुणगान॥10॥

ॐ ह्रीं ज्ञानगोचर गणधर वंदित चरण कमलाय श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा **गणनायक गण के रहे, गणधर गुण की खान।**
शिव पथ के राही बने, पाने पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं स्वयंभू आदिज्ञान गोचर पर्यन्त दश गणधर देव वंदित श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा **काशी के रवि आप हैं, तीर्थराज की शान।**
जयमाला गाते चरण, पार्श्वनाथ भगवान॥

चौपाई

जय-जय पार्श्वनाथ जिन स्वामी, हो स्वामी तुम अन्तर्यामी।
तुमने भेष दिगम्बर धारा, तुमसे कर्म शत्रु भी हारा॥
अश्वसेन वामा सुत प्यारे, काशी के तुम राज दुलारे।
तुमने पद युवराज का पाया, लेकिन तुम्हें नहीं वह भाया॥
गये सैर करने को वन में, मित्र सभी थे जिनके संग में।
गज की कीन्हें आप सवारी, घटना देखी अति दुखकारी॥
पंचाग्नी तप तपने वाला, तपसी देखा एक निराला।
नाग युगल जलते हैं भाई, हिंसक तप तेरा दुखदायी॥
तपसी ने ली हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
नाग युगल को उसमें पाया, महामंत्र नवकार सुनाया॥
मरण किए पाताल सिधाए, धरणेन्द्र पद्मावती कहाए।
तपसी मरकर देव कहाया, संवर नाम देव ने पाया॥
पार्श्वनाथ जी दीक्षा पाए, वन में जाके ध्यान लगाए।
संवर देव वहाँ पर आया, उसके मन में वैर समाया॥
ओले शोले खूब गिराए, पत्थर पानी भी बरसाए।
प्रभु ने स्थिर ध्यान लगाया, देव की ना चल पाई माया॥
धरणेन्द्र पद्मावति तब आये, ऋद्धी से जो फण फैलाए।
प्रभु के ऊपर छत्र लगाया, संवर देव शरण में आया॥
प्रभु जी घाती कर्म नशाए, केवल ज्ञान तभी प्रगटाए।
समवशरण तब देव रचाए, अहिच्छत्र यह तीर्थ कहाए॥
पात्र केशरी यहाँ पे आए, शिष्य पाँच सौ साथ में लाए।
देवी एक वहाँ पर आई, मूर्ति के फण में जो भाई॥
जिसने शुभ श्लोक लिखाया, जैन धर्म का सार बताया।
वहाँ विद्वान दर्श को आए, जैन धर्म वह सब अपनाए॥
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, मुक्ती पद पाए अभिरामी।
पूरे भारत में प्रतिमाएँ, चमत्कार हर जगह दिखाएँ॥

पार्श्व प्रभु के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।
बड़ा गाँव चँवलेश्वर जानो, विराट नगर नैनागिरी मानो॥
नागफणी ऐलोरा गाया, मक्सी महुआ क्षेत्र बताया।
ग्वालियर तीर्थ बिजौलिया भाई, बीजापुर जानो सुखदाई॥
तीर्थ अड़िंदा भी कहलाए, भरत सिन्धु जहँ स्वर्ग सिधाए।
'विशद' तीर्थ कई हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी॥

दोहा **अहिच्छत्र में पार्श्व जिन, पाए केवलज्ञान।**
पूजा करते हम चरण, पाने पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं सर्व ऋद्धि वृद्धि समृद्धि प्रदायक श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा **जिन पद पूजें भाव से, पावें ऋद्धि समृद्धि।**
जीवन में सुख शान्ति हो, होवे धन की वृद्धि॥

इत्याशीर्वाद

श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जी की जय॥

''श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जी की आरती''

तर्ज : ॐ जय...

ॐ जय पार्श्व प्रभो! स्वामी जय जय पार्श्व प्रभो!
तुम चरणों में आरति, करते भक्त विभो॥ ॐ जय...॥
जन्म लिए काशी नगरी में, जग जन हितकारी-2
अश्वसेन वामा माँ के सुत, नाग चिन्ह धारी॥ ॐ जय...॥1॥
युवा अवस्था में प्रभु तुमने, संयम धार लिया-2
धार दिगम्बर मुद्रा, निज का ध्यान किया॥ ॐ जय...॥2॥
वैर विचार कमठ ने आके, उपसर्ग किया भारी-2
समता रस में लीन हुए प्रभु, जिनवर अनगारी॥ ॐ जय...॥3॥
अहिच्छत्र में प्रभु जी तुमने, विशद ज्ञान पाया-2
सौ इन्द्रों ने प्रभु के, पद में सिरनाया॥ ॐ जय...॥4॥
भक्त आपके चरणों, आकर सिरनाते-2
भक्ति भाव से गीत प्रभु जी, चरणों में गाते॥ ॐ जय...॥5॥

श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ जी की आरती

तर्ज : जीवन है पानी की बूँद...

अहिच्छत्र में पार्श्व प्रभु महिमा दिखलाए रे-।
आरती करने जिन चरणों में, हम सब आये रे।।टेक।।
स्वर्ग से चयकर जन्म लिए, काशी नगरी धन्य किए।
घर घर में तब जले दिए, देव तभी जयकार किए।
अश्वसेन माँ वामा देवी, भाग्य जगाए रे।
आरति करने जिन चरणों में, हम सब आए रे...।।1।।
वन में शैर को आप गये, अचरज देखे नये नये।
तपसी से प्रभु यही कहे, जीवों ने कई कष्ट सहे।।
नाग और नागिन हो-हो क्यों आप जलाए रे।
आरती करने जिन चरणों में, हम सब आये रे...।।2।।
नागो को महामंत्र दिया, मन में प्रभु वैराग्य लिया।
संयम धारण आप किया, केशलुच निज हाथ किया।।
निज आतम का प्रभु, ध्यान लगाए रे।
आरती करने जिन चरणों में, हम सब आए रे...।।3।।
जीव कमठ का तब आया, देख प्रभु को गुर्राया।
पत्थर पानी बरसाया, मन में भारी हर्षाया।।
धरणेन्द्र हो-हो पद्मावती, उपसर्ग नशाए रे।
आरति करने जिन चरणों में, हम सब आए रे।।4।।
प्रभु को केवल ज्ञान जगा, रहा कमठ तब ठगा ठगा।
प्रभु पद में वह माथ लगा, मिथ्या का फिर भूत भगा।।
विशद कमठ हो-हो, मन में पछताए रे।
आरति करने जिन चरणों में, हम सब आए रे।।5।।
अहिच्छत्र में पार्श्व प्रभु महिमा दिखलाए रे।
आरति करने जिन चरणों में, हम सब आए रे।।टेक।।

श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
पार्श्वनाथ अहिच्छत्र के, पद में करूँ प्रणाम।।

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।

काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए।।
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।
देवों ने तब रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।
पञ्चाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
सर्प देख तपस्वी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।
नाग युगल मृत्यु को पाएँ, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम था देव ने पाया।।
प्रभु बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहीक्षेत्र में ध्यान लगाए।।
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।
धरणेन्द्र पद्मावती आए, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का छत्र लगाया भाई।।
चैत कृष्ण को चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।।
गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयं भू गाए।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए।।
योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ति पाई।।
श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।
भक्ति से जो ढोक लगाते, भोगी भोग संपदा पाते।।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते।।

पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ॥
पार्श्व प्रभु के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।
'विशद' तीर्थ कई हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी॥

दोहा पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार॥
सुख-शांति सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग॥

प्रशास्ति

चौपाई

जम्बूद्वीप रहा शुभकार, भरत क्षेत्र जिसमें मनहार।
आर्यखण्ड में भारत देश, जिसमें गाया मध्य प्रदेश॥
जिला छतरपुर जिसमें भ्रात, ग्राम कुपी अनुपम विख्यात।
जहाँ थे सेठ भरोसे लाल, जिनकी महिमा रही विशाल॥
जिनके छोटे पुत्र का नाम, लोग बताते नाथूराम।
गृहणी इन्दर देवी नाम, सद्गृहस्थ रह करती काम॥
जिनके द्वितिय पुत्र रमेश, धर्म कार्य जिनका उद्देय।
गुरु विरागसागर महाराज, जिन पर करती दुनिया नाज॥
जाकर पहुँचे उनके पास, पूर्ण करो गुरु मेरी आस।
दीक्षा दो हमको गुरुदेव, भक्त चरण के बनें सदैव॥
मगसिर शुक्ल पंचमी जान, सम्वत् बीस सौ बासठ मान।
ऐलक दीक्षा धरे रमेश, बन गये श्रावक श्रेष्ठ विशेष॥
फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी वार, बीस सौ पैंसठ दिन शनिवार।
सिद्धक्षेत्र द्रोणागिर आन, पाया मुनिपद जहाँ प्रधान॥
मालपुरा में राजस्थान, आप बने आचार्य महान।
अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान, धर्मपुरा दिल्ली में आन॥
ज्येष्ठ कृष्ण दशमी सोमवार, विशद सिन्धु मुनि रचनाकार।
मुनि विशालसागर जी जान के निमित्त से बना विधान॥
लघु धी से यह कीन्हा कार्य, भूल सुधार पढ़ें सब आर्य।
पढ़े सभी साधू निर्ग्रन्थ, श्रावकोपयोगी है यह ग्रन्थ॥
प्राप्त करें सब सम्यक् ज्ञान, पुण्य का भी जो रहा निधान।
गुरु आशीष से पूरा काम, हुआ हमारा है बस नाम॥

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज: माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...॥

रचयिता : **श्रीमती इन्दुमती गुप्ता**, श्योपुर

आचार्य श्री विशदसागर जी द्वारा रचित विधानों की विशाल श्रृंखला पर्वों के दिनों में करने योग्य विधान

1. श्री आदिनाथ मण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ मण्डल विधान
3. श्री सम्भवनाथ मण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ मण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ मण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभु मण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु विधान
9. श्री पुष्पदन्त विधान
10. श्री शीतलनाथ विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ विधान
12. श्री वासुपूज्य विधान
13. श्री विमलनाथ विधान
14. श्री अनन्तनाथ विधान
15. श्री धर्मनाथ विधान
16. श्री शांतिनाथ विधान
17. श्री कुंथुनाथ विधान
18. श्री अरहनाथ विधान
19. श्री मल्लिनाथ विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
21. श्री नमिनाथ विधान
22. श्री नेमिनाथ विधान
23. श्री पार्श्वनाथ विधान
24. श्री महावीर विधान
25. पंच परमेष्ठी विधान
26. णमोकार मण्डल विधान
27. भक्तामर मण्डल विधान
28. सम्मेद शिखर विधान
29. श्रुत स्कंध विधान
30. याग मण्डल विधान
31. पंचकल्याणक विधान
32. त्रिकाल चौबीसी विधान
33. कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. पंचमेरु विधान
37. लघु नन्दीश्वर विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. जिनगुण सम्पत्ति विधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. ऋषिमण्डल विधान
42. विषापहार स्त्रोत विधान
43. वृहदभक्तामर स्तोत्र विधान
44. वास्तु मण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांतिमण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्ट निवारक श्री पदमप्रभु विधान
47. चौंसठ ऋद्धि विधान
48. कर्मदहन मण्डल विधान
49. लघु नवदेवतर विधान
50. सहस्त्रनाम विधान
51. चारित्र लब्धी विधान
52. अनन्त व्रतमण्डल विधान
53. कालसर्प योग निवारक विधान
54. शनि अरिष्ट निवारक विधान
55. आचार्य परमेष्ठी विधान
56. सम्मेद शिखरकूट पूजन विधान
57. सरस्वती विधान
58. विशद महाअर्चना विधान
59. कल्याण मंदिर विधान (बड़ागांव)
60. अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
61. अर्हतनाम विधान
62. सम्यक् आराधना विधान
63. मृत्युंजय विधान
64. शांति प्रदायक शांति विधान
65. लघु मृत्युंजय विधान
66. जम्बूद्वीप विधान
67. चारित्र शुद्धीव्रत विधान
68. क्षायिक नव लब्धी विधान
69. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
70. गोम्मटेश बाहुबली विधान
71. निर्वाण क्षेत्र विधान
72. तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
73. त्रैलोक्य मण्डल विधान
74. पुण्यास्त्रव विधान
75. सप्तऋषि विधान
76. श्री शांति कुंथु अरहनाथ विधान
77. श्रावक व्रत दोष
78. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
79. सम्यक् दर्शन विधान
80. श्रुत ज्ञान व्रत विधान
81. चारित्र शुद्धिव्रत विधान (जाप्य)
82. मनोकामना पूर्णशांति विधान
83. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
84. तीर्थंकर पंचकल्याणक तिथि विधान
85. विजयश्री विधान
86. श्री आदिनाथ विधान (रानीला)
87. श्री शांतिनाथ विधान (सामोद)
88. श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान
89. षट् खण्डागम विधान
90. दिव्य देशना विधान
91. श्री आदिनाथ विधान (रेवाड़ी)
92. नवग्रह शांति विधान
93. रक्षाबन्धन विधान
94. तीर्थंकर विधान
95. गणधरवलय विधान (लघु)
96. गिरनार गिरि विधान
97. श्री चन्द्रप्रभु विधान (तिजारा)
98. ऋषिमण्डल विधान (द्वितीय)
99. कालसर्प दोष निवारक कल्याण मंदिर
100. वास्तु विधान (द्वितीय)
101. भक्तामर विधान (चोपाई)
102. पद्मावती विधान
103. 96 क्षेत्रफल विधान
104. बड़े बाबा विधान
105. कल्पद्रुम विधान (लघु)
106. केवल्यलक्ष्मी प्राप्ति विधान
107. महावीर समवशरण विधान
108. चान्दनपुर महावीर विधान
109. श्री शांति विधान (शांतिनाथ खोह)
110. श्री पार्श्वनाथ विधान (खण्डेला)
111. सुगन्ध दशमी विधान
112. कर्म निर्झरव्रत विधान
113. निर्दुख सप्तमी व्रत विधान
114. रविव्रत पूजा विधान
115. सौभाग्यदशमी व्रत विधान
116. पुरन्दर विधान
117. रोहिणी व्रत विधान
118. अनन्त वीर्य केवली विधान
119. मौन एकादशी व्रत विधान
120. सुख सम्पति व्रत विधान
121. चन्दन षष्ठीव्रत विधान
122. श्री पार्श्वनाथ विधान (निमोला)
123. श्री पार्श्वनाथ विधान (गंभीरा)
124. यागमण्डल विधान (लघु)
125. चारित्र शुद्धि विधान (वृहद)
126. अष्टान्हिका विधान (वृहद)
127. चौबीस तीर्थंकर विधान (वृहद)
128. नवदेवता विधान (वृहद)
129. ऋषि मण्डल विधान (वृहद)
130. नवगृहशांति विधान (वृहद)
131. पंच बालयति विधान (वृहद)
132. तत्वार्थ सूत्र विधान (वृहद)
133. सहस्त्र नाम विधान (वृहद)
134. नन्दीश्वर विधान (वृहद)
135. महामृत्युंजय विधान (वृहद)
136. दशलक्षण विधान (वृहद)
137. रत्नत्रय विधान (वृहद)
138. सिद्धचक्र विधान (वृहद)
139. अभिनवकल्पतरू विधान (वृहद)
140. समवशरण विधान (वृहद)
141. इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
142. धर्मचक्र विधान (वृहद)
143. अर्हत् महिमा विधान (वृहद)
144. विदेह क्षेत्र विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान
145. एक सौ सतर तीर्थंकर विधान (वृहद)
146. तीन लोक विधान (वृहद)
147. सोलहकारण भावना विधान (वृहद)
148. गणधर वलय विधान (वृहद)
149. चौबीस तीर्थंकर निर्वाण भक्ति विधान
150. चौबीस तीर्थंकर विधान (द्वितीय)
151. कल्पद्रुम विधान
152. चौसठ ऋद्धि विधान (लघु)
153. (कांजीबारस) श्रावण द्वादशी विधान
154. चूलगिरि विधान
155. पंचपरमेष्ठी विधान
156. तीस चौबीस विधान
157. आकाश पंचमी विधान
158. पुष्पांजलि विधान
159. नवनिधि विधान
160. साप्ताहिक सप्त विधान
161. पल्य विधान
162. शांतिभक्ति विधान
163. आ. श्रीविराग सागर विधान
164. चैत्य भक्ति विधान
165. श्री ऋषभदेव विधान
166. रत्नत्रय विधान
167. ऋद्धि सिद्धि विधान
168. भरत केवली विधान
169. सर्वतोभद्र विधान
170. शांतिविधान (सर्वोदयतीर्थ)
171. आदिनाथ विधान (अष्टापद)
172. ऋषभदेव विधान (नजफगढ़)
173. सैंतालिश भक्ति विधान
174. शांति विधान (तिजारा)
175. पंचकल्याणक विधान (लघु)
176. यागमण्डल विधान (लघु)
177. योगसार विधान
178. गणधर वलय विधान (लघु)
179. देहरा तिजारा चन्द्रप्रभु विधान (लघु)
180. जम्बू स्वामी विधान
181. तत्वार्थ सूत्र
182. इष्टोपदेश
183. द्रव्य संग्रह
184. रत्नकरण्ड श्रावकाचार
185. समाधि तन्त्र
186. सुभाषित रत्नावली
187. द्रव्य संग्रह (लघु)
188. समाधिसार
189. ज्ञानांकुश
190. संबोध पंचाशतिका
191. ध्यानास्तव
192. स्वरूप सम्बोधन
193. वैराग्य मणिमाला
194. धम्म रसायण
195. नीति सार
196. तत्व सार
197. योग सार
198. तत्व विचार सार
199. तत्वार्थ सूत्र (लघु)
200. वासाणुपेक्खा
201. चौबीस तीर्थंकर पुराण
202. रयणसार
203. संबोध पंचासिकादि संग्रह
204. सोलह कारण भावना
205. दशलक्षण ग्रन्थ
206. विशद अभिनन्दन ग्रन्थ
207. मोक्ष पथ गामी
208. दश भक्ति संग्रह
209. दस धर्म प्रवाह
210. पंचागम संग्रह
211. धर्म की दश लहरें
212. जिंदगी क्या है
213. बिन खिले मुरझा गए
214. संस्कार विज्ञान
215. प्रवचन पर्व
216. जरा सोचो तो
217. मूक उपदेश 1, 2
218. जीवन की मनः स्थितियाँ
219. चिंतन सरोवर 1, 2, 3
220. भगवती आराधना
221. बाल विज्ञान 1, 2, 3
222. विशद श्रमण चर्या
223. स्तुति स्तोत्र संग्रह
224. 70 चालीसा संग्रह
225. 108 आरती संग्रह
226. विशद भजन संग्रह
227. भक्ती के फूल
228. 1008 मुक्तक संग्रह
229. विराग वंदन
230. आराध्य अर्चना
231. आराधना के सुमन
232. विशद ज्ञान ज्योति
233. संगीत प्रसून
234. भक्तामर भावना
235. सहस्रकूट जिनार्चना
236. जिनवाणी
237. पूजन-पाठ-प्रतीक
238. काव्यपुंज
239. पंच जाप्य
240. प्रतिष्ठा विधि
241. ज्ञान वारिधि प्रतियोगिता
242. प्रतिक्रमण सार्थ
243. ईर्यापथ भक्ति
244. सिद्ध भक्ति
245. श्रुत भक्ति
246. आचार्य भक्ति
247. योगी भक्ति
248. चारित्र भक्ति
249. पंचगुरु भक्ति
250. शांति भक्ति
251. समाधि भक्ति
252. नन्दीश्वर भक्ति
253. निर्वाण भक्ति
254. सिद्ध भक्ति (लघु)
255. श्रुत भक्ति (लघु)
256. आचार्य भक्ति (लघु)
257. निर्वाण काण्ड
258. स्तुति स्तोत्र संग्रह
259. सुप्रभात स्तोत्र
260. नवदेवता स्तोत्र
261. महावीराष्टक स्तोत्र
262. कल्याण मंदिर स्तोत्र
263. सरस्वती स्तोत्र
264. वागेश्वरी स्तोत्र
265. दर्शन पाठ
266. वीतराग स्तोत्र
267. चौबीस तीर्थंकर स्तोत्र
268. लघु स्वयंभू स्तोत्र
269. वृहद स्वयंभू स्तोत्र
270. ऋषि मण्डल स्तोत्र
271. नवग्रह शांति स्तोत्र
272. जैन रक्षा स्तोत्र
273. वज्र पंजर स्तोत्र
274. ऐं विद्या स्तोत्र
275. ॐ का स्तोत्र
276. श्रीं विद्या स्तोत्र
277. णमोकार कल्प स्तोत्र
278. उपसग्गहर स्तोत्र
279. पार्श्वनाथ स्तोत्र
280. चैत्यालयाष्टक
281. करूणाष्टक
282. अद्याष्टक
283. एकीभाव स्तोत्र
284. विषापहार स्तोत्र
285. अकलंक स्तोत्र
286. चतुर्विंशतिका स्तोत्र
287. सहस्रनाम स्तोत्र
288. गोमटेश स्तोत्र
289. गणधर वलय स्तोत्र
290. समाधि पाठ
291. अध्यात्म शयन गीतिका
292. विशद भावना
293. सोलह कारण भावना स्तोत्र
294. क्षमा वंदना
295. चैत्य वंदना
296. सामायिक पाठ
297. आलोचना पाठ
298. सम्मेद शिखर वंदना
299. कल्याणालोचना
300. परमानंद स्तोत्र
301. बारह भावना
302. समाधि भावना
303. चौंसठ ऋद्धि स्तोत्र
304. इष्ट प्रार्थना
305. तीन लोक वंदना
306. मेरी विशद भावना
307. सोलह कारण भावना स्तोत्र (लघु)
308. बारह भावना
309. वैराग्य भावना
310. वर्धमान स्तोत्र
311. तीर्थयात्रा
312. तीर्थ वन्दना
313. प्रभाती गीत
314. प्रार्थना
315. आदिनाथ स्तोत्र
316. मंगल भावना
317. सिद्ध स्तुति
318. निर्ग्रन्थ बनने की भावना
319. विद्यमान विंशति स्तोत्र
320. विनती